

पूज्याय राघवेन्द्राय

तनुनात त्रायते इतितंत्रः। अर्थात् शरीर से की जाने वाली चेष्टाएँ योग साधना तंत्र कहलाती हैं। मननात त्रायते इति मंत्रः। अर्थात् मन या आत्मा से करने वाली साधना को मंत्र शास्त्र कहा जाता है। बाजाक्षर का उच्चारण जीभ से किया जाता है जो शरीर का ही एक भाग है अतः वह तंत्रशास्त्र का ही एक भाग है।

आत्मा का बाह्य रूप चित्त जब शून्य हो जाता है तब आत्मा के अंतःरूप दिव्यचक्षु के उत्तेजित होने से सबको अद्वैत के रूप में अनुभव कराना मंत्र कहलाता है।

श्री राघवेन्द्र स्वामी मंत्रालय के संस्थापक हैं। मंत्रालय अर्थात् ध्यान-साधना के निलय हैं, यदि वह योगसाधना का आलय न होकर कुछ अन्य है तो हास्यास्पद है। वहाँ तो सभी के लिए एक ही रास्ता है - चित्तवृत्ति निरोध। इसका एकमात्र सूत्र है - आनापानसति।

साधना में प्रवृत्त होने के लिए मूर्ख को दस, पण्डित को पाँच और योगी को केवल एक गाली की जरूरत है - बस इतना ही अन्तर है। अलग-अलग लोगों के लिए अलग-अलग रास्ते नहीं होते।

श्री राघवेन्द्र जी ने स्वयं सिद्ध होकर सबको सिद्धि का मार्ग दिखाया। वे मूर्ति पूजा को पसन्द नहीं करते और न ही 'पूज्याय राघवेन्द्राय' जैसे नाम स्मरण को। पूजा के रूप में वे ध्यान योग साधना को ही स्वीकार करते हैं।

मुँह बन्द रखना है अर्थात् मंत्र जाप नहीं चाहिए। कर्मकाण्ड भी नहीं करना है। केवल सुखासन में बैठ कर, आँखें बन्द कर केवल साँस पर ध्यान देना है।

श्री राघवेन्द्र जी ने इसी का आचरण किया, सबको सिखाया भी। प्रत्येक व्यक्ति को राघवेन्द्र जी की तरह बनना है।